
Rama Chalisa

श्रीरामचालीसा

Document Information

Text title : raama chaaliisaa

File name : rama40.itx

Category : chAlisA, raama

Location : doc_z_otherlang_hindi

Transliterated by : N.A.

Proofread by : N.A.

Description-comments : Devotional prayer to Shri Rama

Latest update : March 14, 2005

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

January 14, 2022

sanskritdocuments.org

Rama Chalisa

श्रीरामचालीसा



श्री रघुबीर भक्त छितकारी । सुनि लीजै प्रभु अरज डमारी ॥
निशि दिन ध्यान धरै जो कोछ । ता सम भक्त और नहिं छोछ ॥
ध्यान धरे शिवजु मन मारि । अछमा छन्द पार नहिं पारि ॥
जय जय जय रघुनाथ कृपाला । सदा करो सन्तन प्रतिपाला ॥
दूत तुम्हार वीर अनुमाना । जासु प्रभाव तिहुँ पुर जाना ॥
तुव भुजदण्ड प्रयाण्ड कृपाला । रावण मारि सुरन प्रतिपाला ॥
तुम अनाथ के नाथ गोसाछ । दीनन के छो सदा सछाछ ॥
अछमाटिक तव पार न पावै । सदा छश तुम्हरो यश गावै ॥
चारिउ वेद भरत छै साभी । तुम भक्तन की लज्जा राभी ॥
गुण गावत शारद मन मारि । सुरपति ताको पार न पारि ॥
नाम तुम्हार लेत जो कोछ । ता सम धन्य और नहिं छोछ ॥
राम नाम छै अपरम्पारा । चारिहु वेदन जाछि पुकारा ॥
गाणपति नाम तुम्हारो लीन्छौं । तिनको प्रथम पूज्य तुम कीन्छौं ॥
शेष रटत नित नाम तुम्हारा । मछि को लार शीश पर धारा ॥
कूल समान रछत सो लारा । पावत कोउ न तुम्हरो पारा ॥
भरत नाम तुम्हरो उर धारो । तासौं कबहुँ न राण मेँ डारो ॥
नाम शत्रुघन लृढय प्रकाशा । सुमिरत छोत शत्रु कर नाशा ॥
लषन तुम्हारे आझाकारी । सदा करत सन्तन रणवारी ॥
ताते राण जुते नहिं कोछ । युद्ध जुरे यमहुँ डिन छोछ ॥

मडा लकश्मी धर अवतारा । सब विधि करत पाप को छारा ॥
सीता राम पुनीता गायो । भुवनेश्वरी प्रभाव दिभायो ॥
घट सौं प्रकट भई सो आछ । जाको देखत यन्द्र लजाछ ॥
सो तुमरे नित पांव पलोडत । नवो निह्दि यरण में लोटत ॥
सिद्धि अठारु मंगल डारी । सो तुम पर जावै बलिडारी ॥
औरहु जो अनेक प्रभुताछ । सो सीतापति तुमहि बनाछ ॥
छ्छा ते कोटिन संसारा । रयत न लागत पल की बारा ॥
जो तुमडरे यरनन यित लावै । ताको मुक्ति अवसि डो जावै ॥
सुनहु राम तुम तात डमारे । तुमहि भरत कुल-पूज्य प्रचारे ॥
तुमहि देव कुल देव डमारे । तुम गुरु देव प्राण के प्यारे ॥
जो कुछ डो सो तुमडीं राजा । जय जय जय प्रभु रामो लाजा ॥
रामा आत्मा पोषण डारे । जय जय जय दशरथ के प्यारे ॥
जय जय जय प्रभु ज्योति स्वरूपा । निगुण ब्रह्म अभाण्ड अनूपा ॥
सत्य सत्य जय सत्य-व्रत स्वामी । सत्य सनातन अन्तर्यामी ॥
सत्य भजन तुमडरो जो गावै । सो निश्चय चारों हुल पावै ॥
सत्य शपथ गौरीपति कीन्हीं । तुमने भक्तहिं सब सिद्धि दीन्हीं ॥
ज्ञान लूँध दी ज्ञान स्वरूपा । नमो नमो जय जापति भूपा ॥
धन्य धन्य तुम धन्य प्रतापा । नाम तुमडार डरत संतापा ॥
सत्य शुद्ध देवन मुभ गायो । बज्रु दुन्दुभी शंभु बजायो ॥
सत्य सत्य तुम सत्य सनातन । तुमडीं डो डमरे तन मन धन ॥
याको पाह करे जो डोछ । ज्ञान प्रकट ताके डर डोछ ॥
आवागमन मिटै तिडि डेरा । सत्य वचन माने शिव मेरा ॥
और आस मन में जो ल्यावै । तुलसी दल अरु हुल यढावै ॥
साग पत्र सो भोग लगावै । सो नर सकल सिद्धता पावै ॥

અન્ત સમય રઘુબર પુર જાઈ । જહાં જન્મ હરિ ભક્ત કહાઈ ॥

શ્રી હરિ દાસ કહે અરુ ગાવૈ । સો વૈકુણ્ઠ ધામ કો પાવૈ ॥

દોહા

સાત દિવસ જો નેમ કર પાઠ કરે ચિત લાય ।

હરિદાસ હરિકૃપા સે અવસિ ભક્તિ કો પાય ॥

રામ ચાલીસા જો પઢે રામચરણ ચિત લાય ।

જો ઇચ્છા મન મેં કરૈ સકલ સિદ્ધ હો જાય ॥

॥ શ્રી રામ સ્તુતિ ॥

શ્રી રામચન્દ્ર કૃપાલુ ભજુ મન હરણ ભવ ભય દારુણં ।

નવકંજ-લોચન કંજ મુખ કર કંજ પદ કંજારુણં ॥

કન્દર્પ અગણિત અમિત છવિ નવનીલ-નીરદ સુન્દર ।

પટપીત માનહુ તડકિત રુચિ શુચિ નૌમિ જનક સુતાવરં ॥

ભજુ દીન બન્ધુ દિનેશ દાનવ દૈત્યવંશ-નિકન્દનં ।

રઘુનન્દ આનન્દ કંદ કૌશલચન્દ દશરથ-નન્દનં ॥

સિર મુકુટ કુણ્ડલ તિલક ચારુ ઉદારુ અંગ વિભૂષણં ।

આજાનુ-ભુજ-શર-ચાપ-ધર- સંગ્રામ જિત-ખરદૂષણં ॥

ઇતિ વદતિ તુલસીદાસ શંકર-શેષ-મુનિ-મન-રંજન ।

મમ હૃદય-કંજ નિવાસ કુરુ કામાદિ ખલદલ-ગંજન ॥

મનુ જાહિં રાયેભિ મિલિહિ સો બરુ સહજ સુંદર સાંવરો ।

કરુણાનિધાનુ સુજાન સીલુ સનેહુ જાનત રાવરો ॥

એહિ ભાંતિ ગૌરિ અસીસ સુનિ સિય સહિત હિયં હરષી અલી ।

તુલસી ભવાનિહિ પૂજિ પુનિ પુનિ મુદિત મન મંદિર ચલી ॥

દોહા

જાનિ ગૌરી અનુકૂઅ સિય હિય હરષુ ન જાઇ કહિ ।

મંજુલ મંગલ મૂલ બામ અંગ ફરકન લગે ॥

॥ શ્રી રામાષ્ટકઃ ॥

હે રામા પુરુષોત્તમા નરહરે નારાયણા કેશવા ।

गोविन्दा गरुडध्वजा गुणनिधे दामोदरा माधवा ॥

डे कृष्ण कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते ।

वैकुण्ठाधिपते यराचरपते लक्ष्मीपते पाछि माम् ॥

आद्यौ रामतपोवनादि गमनं ल्वा मृगं काञ्चनम् ।

वैदेही उरुणं जटायु मरुणं सुग्रीव सम्भाषणम् ॥

वालीनिर्दलनं समुद्रतरुणं लंकापुरीदालनम् ।

पश्चाद्रावण कुम्भकर्णलननं अतस्त्रि रामायणम् ॥

॥ आरती श्रीरामचन्द्रञ्च की ॥

जगमग जगमग जेत जली है । राम आरती डोन लगी है ॥

भक्ति का दीपक प्रेम की बाती । आरती संत करे दिन राती ॥

आनन्द की सरिता उभरी है । जगमग जगमग जेत जली है ॥

कनक सिंहासन सिंया समेता । बैठलि राम डोई चित येता ॥

वाम भाग में जनक लली है । जगमग जगमग जेत जली है ॥

आरती डनुमत के मन भावे । राम कथा नित शंकर गावे ॥

संतों की ये भीडः लगी है । जगमग जगमग जेत जली है ॥

॥ छति ॥

Rama Chalisa

pdf was typeset on January 14, 2022

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

